आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye Weekly No. 280 ARYA SABHA MAURITIUS *14th Dec. to 31st Dec. 2013*

KARMA MÉRÉ DAHINÉ HĀTH MÉ JEET MÉRÉ BĀYÉ HĀTH MÉ

L'ACTION DE LA MAIN DROITE MÈNE VERS LA RÉUSSITE À LA MAIN GAUCHE.

Om ! Kritam mé dakshiné hasté jayo mé savya āhitaha.
Gojid bhuyassamashvajid dhananjayo hiranyajit.

Atharva Véda 7/50/8

Glossaire / Shabdārtha

Kritam – labeur, action, travail, persévérance, **mé** – mon, ma, mes, **dakshiné**– droite, **hasté** – dans ma main, **jaya, jayo** – victoire, succès, réussite, **savya / savyé** – dans ma main gauche, **āhitaha** – se trouve, **Gojid / Gojit** – initier des actions héroïques et remporter la victoire sur les champs de bataille.

Dans le contexte de ce mantra, le Seigneur nous parle en parabole. Il nous laisse comprendre que la vie de l'homme sur la terre, en quelque sorte, a une ressemblance à un champ de bataille où chaque être humain est un combattant et doit affronter les problèmes voire la dure réalité de la vie, lutter, entreprendre de grandes actions et réussir dans sa vie tel un héros sur le champ de bataille.

Ashwajit / Ashwajid – être capable de maîtriser ses sens, ses instincts et soi-même, tout comme le conducteur d'un char exerce un contrôle parfait sur ses chevaux. **Dhananjaya** – qui peut devenir le maître de richesse et faire fortune.

Hiranyajit / hiranyajid - qui peut aussi gagner ou acquérir des richesses matériels telles que de l'argent et de l'or Bhuyassam – Que je sois / Qu'il soit.

Interprétation / Anushilan

Dans ce mantra ou verset d'Atharva Véda, le Seigneur nous conseille d'être toujours dynamique et il nous indique la voie d'une vie remplie de bonheur, de prospérité et de succès.

Il nous inspire à travailler dur, à persévérer, à être discipliné, patient, optimiste, hardi et courageux dans la vie, et surtout de ne jamais abdiquer devant les difficultés.

C'est en entreprenant des actions courageuses, comme des héros sur les champs de bataille, que l'on arrive à aplanir, venir à bout, ou triompher des problèmes, des obstacles ou des défis qui surgissent dans notre vie quotidienne ou professionnelle.

Il faut aussi que l'on ait la maîtrise de soi-même (c'est-à-dire de ses instincts, de ses sens, de ses potentiels et autres qualités) et acquérir la compétence voulue pour réaliser des profits ou des gains financiers, se procurer de l'or et d'autres biens matériels, c'est-à-dire de faire fortune par des moyens honnêtes.

Ce mantra d'Atharva Véda nous gratifie d'un grand principe de la vie, que nous devons tous adopter et mettre en pratique avec un tel état d'esprit :

"L'action de ma droite engendre la réussite à ma main gauche."

N. Ghoorah

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न

डॉ० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न

५ दिसम्बर सन् २०१३ को आर्य सभा द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का शुभारम्भ यूनियन वेल, त्राबुचिक के नवनिर्मित भवन के विशाल प्रांगण में हुआ। यह सम्मेलन अनेक कार्यक्रमों के साथ ८ दिसम्बर को सफलतापूर्वक समाप्त हुआ। इस चार दिवसीय आर्य सम्मेलन को सफल बनाने में बहुत से महानुभावों का योगदान रहा। सभी साधुवाद के पात्र हैं।

दिनांक ५ दिसम्बर को तीन बजे अपराह्न में डॉक्टर उषा जी शर्मा 'उषस्' और वरिष्ठ पुरोहित-पुरोहिताओं ने बड़ी ही श्रद्धापूर्वक वृहद् यज्ञ सम्पन्न किया। यज्ञोपरान्त मॉरीशस गणतन्त्र के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राजकेश्वर परयाग जी ने नवनिर्मित 'वैदिक सेंटर' और मॉरीशस में आर्य समाज से सम्बन्धित एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस बीच डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज के छात्रों ने मधुर गीतों से वातावरण को आनन्दमय बना दिया।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

नानकचन्द : एक कर्तव्य-निष्ठ पिता

माता-पिता देवता स्वरूप होते हैं। वे जीवन पर्यन्त अपनी संतानों का हित चाहते हैं। हर पल उनकी भलाई करने पर तत्पर रहते हैं। स्वयं घोर संकटों को सहन करके अपनी संतानों को सुख, समृद्धि और आनन्द देने का प्रयत्न करते हैं। उन्हें सुसंतान बनाकर ज्ञान-विज्ञान प्राप्त करने और यश कमाने का मार्ग दिखाते रहते हैं। बुरे व्यवहारों, दुर्व्यसनों और सारे कुकर्मों से दूर रखने की पूरी कोशिश करते हैं, ताकि वे सज्जनता का प्रमाण देकर कुल का नाम रोशन करें।

मुँशीराम के पिता जी भी अपने पुत्र को सत्य विद्याओं से परिपूर्ण करना चाहते थे। उन्हें भौतिक और आध्यात्मिक सुख दोनों प्रदान करना चाहते थे। बचपन में उन्हें बड़े लाड़-प्यार से पालन-पोषण करते थे, परंतु बाबू मुँशीराम जवान होकर सांसारिक सुख-भोग में लिप्त हो चुके थे। खूब पैसा कमाना, मौज-मस्ती में जीना ही उनके जीवन का उद्देश्य हो गया था। पुत्र के इन अभद्र व्यवहारों को देखकर पिता नानकचन्द जी दुखी और चिन्तित थे। बार-बार उन्हें धार्मिक ज्ञान दिलाने के लिए प्रेरित करते रहते थे, क्योंकि उन्हें पता था कि आध्यात्मिक ज्ञान ही मुँशीराम की जीवन दिशा बदल सकता है।

पूज्य पिता नानकचन्द जी बीस-बाईस साल तक अपने बेटे को सत्कर्म करने की प्रेरणा देते रहते थे यद्यपि मुँशीराम कुसंग में पड़ गए थे, लेकिन वे आज्ञाकारी पुत्र थे। आखिर उनका प्रयत्न सफल हुआ, जब बाईस साल के उम्र में पिता की आज्ञा पाकर, वे बरेली में महर्षि दयानन्द जी का व्याख्यान सुनने गए जब स्वामी जी ओ३म् की व्याख्या कर रहे थे। महर्षि जी के व्यक्तित्व उत्तम विचार, धार्मिक दृष्टिकोण, सेवाभाव, सामाजिक सुधार और मानव-उद्धार आदि महान गुणों को देखकर वे अचम्भित हो गए और चौदह दिनों तक उनका व्याख्यान सुनने गए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अद्भुत प्रभाव से वे धार्मिक पुरुष बनकर आर्य समाज के आंदोलन में समर्पित हो गए और उन्होंने अपना नाम आर्य जगत में अमर कर दिया।

यह कहा जाता है कि श्री नानकचन्द जी प्रतिमा की पूजा पर विश्वास करते थे, इसीलिए जब एक दिन महर्षि दयानन्द जी अपने व्याख्यान में मूर्तिपूजा का खण्डन कर रहे थे तो वे वहाँ से उठकर चले आए। पुत्र को प्रभावित करने वाले पिता ने महर्षि जी का प्रवचन सुनना बन्द कर दिया। फिर कभी जाने की इच्छा नहीं की, परन्तु मुँशीराम पिता की आज्ञा पाकर महर्षि जी का प्रवचन सुनने जाते थे। उन्हें सत्य-विद्या ग्रहण करने की प्रेरणा मिल गई थी। उसी प्रेरणा-ज्योति ने उन्हें सच्चे ईश्वर की पहचान कराई और वे स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से आर्य समाज के आंदोलन में पूरा सहयोग देने लगे।

हम राजभक्त और मूर्तिपूजक श्री नानकचन्द जी के बहुत आभारी हैं, जिनकी प्रेरणा से यशस्वी आर्य-पुत्र मुंशीराम को सत्यालोक मिला और अन्यों को आलोकित करने के लिए उन्होंने गुरुकुल की स्थापना करके भारतीयों को भारतीय शिक्षण पद्धति अनुकूल ज्ञान प्राप्त करने का अवसर दिया। सामाजिक कुरीतियों को दूर किया, शुद्धि आंदोलन करके हिन्दुओं की रक्षा की और भारतीय स्वतन्त्रता निमित्त मानव समाज में एकता क़ायम करके भारत को स्वतन्त्र किया।

हम सभी माता-पिता जनों को भी श्री नानकचन्द जी से प्रेरणा पाकर अपनी संतानों को सत्यवादी, विद्या प्रेमी, आज्ञाकारी सुशील, वैदिक-धर्मी, ईश्वर-भक्त, समाज-सेवी, देश-हितैषी बनाकर उनका जीवन सफल बनाने की कोशिश करें ताकि हमारे बच्चे कुमार्गों से हटकर, दुर्व्यसनों से बचकर वैदिक धर्म की पताका उड़ाने के योग्य बनें।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर हम अपने-अपने परिवार में ज़रा झाँक कर देखें कि हमारे बच्चों का झुकाव किधर बढ़ता जा रहा है। अगर ग़लत रास्ते पर उनके कदम बढ़ने लगे हैं तो उन्हें सही मार्ग पर लाने के लिए उपाय ढूँढ़ना है। हम अपने उभरते बच्चों को सुधारने में सफल हुए तो समझें कि हमारा भविष्य उज्ज्वल है और इस देश में आर्य समाज का झण्डा ऊँचा रहेगा।

बालचन्द तानाकूर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न

पृष्ठ १ का शेष भाग

तत्पश्चात् भारतीय राज्य सभा के सांसद प्रोफ़ेसर रामप्रकाश की अध्यक्षता में उद्घाटन समारोह के दौरान सभा मन्त्री हरिदेव रामधनी जी ने बारी-बारी से सभा-प्रधान, श्री बालचन तानाकूर, कला एवं संस्कृति मन्त्री माननीय मुकेश्वर चुन्नी, महामहिम राष्ट्रपति महोदय को सन्देश देने के लिए आमन्त्रित किया। उस अवसर पर सभा-प्रधान, श्री बालचन तानाकूर, उपप्रधाना श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण और श्री बिसेसर राकाल जी को श्री विनय आर्य जी ने भारत की ओर से 'आर्य रत्न' की उपाधि से विभूषित किया। साथ ही संस्कृत के कुछ छात्र-छात्राओं को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

सभा-उपप्रधान, श्री सत्यदेव प्रीतम जी के धन्यवाद भाषण के बाद ब्रह्मयज्ञ हुआ। सहभोज के अनन्तर प्रथम दिवस का कार्यक्रम संगीत मंडलियों के मधुर गीतों द्वारा समाप्त हुआ।

६.१२.२०१३ के शैक्षणिक सत्र

दिनांक छः दिसम्बर को प्रातःकाल अग्निहोत्र के पश्चात् पंडिता सुरेशा बोरण एवं मंडली द्वारा संगीत का कार्यक्रम हुआ। फिर प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगसेर जी की अध्यक्षता में प्रमुख विषय - **'भारतेतर देशों में भारतीय धर्मोपदेशकों का आर्य समाज के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में योगदान'** पर निम्नलिखित जनों के भाषण और आलेख प्रस्तुत किये गये :– श्रीमती प्रतिभा भोला,पी.पी.एस, प्रोफ़ेसर रामप्रकाश, स्वामी धरमदेव जी महाराज, श्री आनन्द मल्लू, पंडित यशवन्त चूड़ोमणि, श्रीमती सौभाग्यवती धनुकचन्द, श्री विनय आर्य आदि। इस सत्र के प्रतिवेदक थे – डॉक्टर जयचन्द लालबिहारी ।

दिवस के भोजन के पश्चात् एक बजे दूसरा सत्र प्रारम्भ हुआ। विषय था - 'भारतीय धर्मोपदेशकों द्वारा सामाजिक सुधार कार्य।' पंडित धनेश्वर दायबू और मंडली द्वारा संगीत के कार्यक्रम के पश्चात् भारत के उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, श्री देवेन्द्रपाल वर्मा की अध्यक्षता में निम्नलिखित विद्वानों के आलेख प्रस्तुत किये गये – श्री रवीन्द्र शिवपाल, डा० रुद्रसेन नीऊर,श्री प्रह्लाद रामशरण, श्री राजवीरसिंह शास्त्री, डा० जीतेन्द्र चिकारा, आचार्य देव शर्मा, आचार्य सनतकुमार, योगिराज विश्वपाल जयन्त, श्रीमती शान्ति मोहाबीर, पंडित धर्मेन्द्र रिकाई, स्वामी धर्मदेव जी और आचार्य अखिलेश जी। श्री प्रभाकर जीऊत जी ने आलेखों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

इस सत्र की समाप्ति पर सावान आर्य ज़िला समिति की ओर से संगीत, अग्निहोत्र और सन्ध्या के कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए।

७.१२.२०१३ के शैक्षणिक सत्र

इस दिन के प्रातःकालीन सत्र में आर्य महिला सम्मेलन हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, 'आर्य रत्न' ने किया। शैक्षणिक सत्र का मुख्य विषय था – ***महिला मुक्ति एवं शक्तिकरण में आर्य समाज का योगदान।*** श्रीमती सती रामफल 'आर्य भूषण' ने बखूबी कार्य का संचालन किया। मुख्य अतिथि थीं – डा० उषा शर्मा 'उषस्' और विशिष्ट अतिथि प्रोफ़ेसर रेशमी रामधनी जी। दोनों ने सारगर्भित सन्देश दिये। निम्नलिखित महिलाओं ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किये :– श्रीमती आर्यवती बुलाकी, श्रीमती विद्यावती कासिया, श्रीमती राजलक्ष्मी रोशनी, पंडिता धनवन्ती पोखराज, पंडिता सत्यम् चमन, पंडिता विद्ववन्ती जहाल। पुरुषों में थे – पंडित माणिकचन्द बुद्धू ।

आर्य युवा सम्मेलन

आर्य युवा सम्मेलन के दो सत्र थे- प्रथम सत्र के अन्तर्गत आचार्य आशीष जी ने एक युवा-गोष्ठी की अध्यक्षता कर रही थीं – श्रीमती पूनम तिलकधारी जी। कार्य संचालन कर रहे थे आर्य युवक संघ के मन्त्री श्री धरमवीर गंगू जी और विशिष्ट अतिथि थे आचार्य आशीष जी। इस सत्र का विषय था – युवकों के समक्ष चुनौतियाँ। निम्नलिखित लोगों ने अपने आलेख प्रस्तुत किये - कुमारी मोहिनी प्रभु, श्री निशान गजाधर, कुमारी प्रवीणा रामधनी, आचार्य वाचोनिधि, श्री ब्रह्मदेव मोकुनलाल, डॉ० ओ.पी. अगरवाल और श्री विद्या भूषण।

समापन-समारोह

८ दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन का समापन समारोह हुआ। मुख्य अतिथि थे उपप्रधान मन्त्री, माननीय अनिल कुमार बेचू जी और विशिष्ट अतिथि शिक्षा एवं मानव संसाधन मन्त्री, माननीय डॉक्टर वसन्त कुमार बनवारी जी। शिक्षा-मन्त्री, उपप्रधान मन्त्री एवं श्री विनय आर्य जी के शिक्षाप्रद भाषण हुए। प्रोफ़ेसर रामप्रकाश जी ने अध्यक्षीय पद से बहुत ही प्रभावशाली सन्देश दिया। समापन समारोह के अवसर पर डा० उदयनारायण गंगू जी ने निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तावित किये, जो सर्वसम्मति से पारित हुए :–

(१) 'वैदिक सेंटर' भवन के एक तल पर वैदिक प्रशिक्षण-कार्य प्रारम्भ किया जाय, जिसके अन्तर्गत वैदिक वाङ्गमय का गहन अध्ययन एवं अंग्रेज़ी, फ्रेंच और हिन्दी में अनुवाद-कार्य हो ।

(२) वैदिक धर्मोपदेशकों को प्रशिक्षित करके हिन्द महासागर के देशों में वेद-प्रचार-कार्य के लिए भेजा जाय।

(३) मॉरीशस में आर्य समाज के इतिहास को सुरक्षित रखने के लिए एक लेखागार और एक पुस्तकालय की व्यवस्था की जाय।

(४) सामाजिक सुधार-कार्य को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित कार्य किये जायें :-

(i) मद्य-निषेध आन्दोलन

(ii) द्युत-क्रीड़ा-निषेध आन्दोलन

(iii) योग्य डॉक्टर-डाक्टरनियों और पुरोहित-पुरोहिताओं की एक परामर्श-समिति गठित की जाय, जिसके द्वारा युवक-युवतियों को माता-पिता बनने से पहले परामर्श देने का कार्य किया जाय ।

(५) इस वैदिक केन्द्र में कम्प्यूटर युग से जुड़ने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) की ओर युवा पीढ़ी को प्रेरित करने के लिए ज़ोरदार कार्य किया जाय।

अन्त में आर्य सभा के मान्य प्रधान, डॉक्टर रुद्रसेन जी नीऊर ने सभी सन्देश दाताओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट की तथा इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने वाले सभी जनों को धन्यवाद किया।

यह चार दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आर्य सभा के इतिहास का एक नया अध्याय बन कर रह गया, जो भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक रहेगा।

चार आर्यसमाजी सेवक सम्मानित

श्रीमती शान्ति सोलिक मोहाबीर, एम.ए.

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान पाना सबके वश की बात नहीं । जिसने जीवन में तप-त्याग को महत्व दिया हो, वही ऐसा सम्मान पा सकता है। यहाँ हम उन चार तपस्वी व्यक्तियों के नाम बताना चाहेंगे, जिन्होंने हाल ही में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त किया। एक हैं डॉक्टर उदयनारायण गंगू जी, दूसरे श्री बालचन तानाकूर जी, तीसरे श्री बिसेसर राकाल जी और चौथी हैं, श्रीमती धन्वन्ती रामचर्ण जी ।

डॉक्टर उदय नारायण गंगू जी

हिन्दी भाषा और वैदिक संस्कृति के संरक्षक, डॉ० उदयनारायण गंगू को

सम्मानित करके अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन के आयोजकों ने यह प्रमाणित कर दिया कि हिन्दी जगत् में भले ही देर है, परन्तु अंधेर नहीं है। आज से नहीं, कदाचित् जब से डॉ० गंगू ने होश संभाला है, तभी से वे पूर्णरूपेण हिन्दी भाषा के प्रति समर्पित हैं। मॉरीशस का हिन्दी जगत् आपको शिक्षक रूप में पहचानता है। बैठका से लेकर विश्वविद्यालय तक हिन्दी भाषा ने आपकी उँगली थामकर अपनी यात्रा तय की है। डी.ए.वी डिग्री कॉलेज की स्थापना, उसका संचालन, उसकी छोटी-सी-छोटी माँग पर अपना सर्वस्व आप अर्पण करते हैं। हाथ कंगन को आरसी क्या ? जिसके पास ईश्वर की कृपा से दृष्टि है, उसे सब कुछ दिखाई देता है। हाँ यह बात अलग है कि कई लोग सूरदास कहलाना पसंद करते हैं ।

मंगलवार ८ अक्तूबर २०१३ को Le Grand Bleu Hotel में अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन द्वारा एक दिवसीय सम्मेलन हुआ था। सम्मेलन का विषय था – 'हिन्दी सिनेमा के सौ साल एवं हिन्दी भाषा' । अकादमिकों (Academics), पत्रकारों, चित्रकारों, व्यंग्यकारों, लेखकों, फोटोग्राफ़रों, संपादकों व कवियों का एक प्रतिनिधि-मंडल भारत से मॉरीशस आया हुआ था।

इस अवसर पर अनेक भारतीय तथा मॉरीशसीय विद्वानों ने अपने आलेख की प्रस्तुति की थी; भारतीय चित्रकार श्री हर्षवर्धन आर्य की चित्र-प्रदर्शिनी हुई थी ; काव्य गोष्ठी भी हुई थी, जिसमें श्री रामदेव धुरंधर, श्री धनराज शम्भू, श्री राज हीरामन, श्री गुलशन सुखलाल, श्री विनय गुदारी और अन्य साहित्यकारों-विद्वानों ने भाग लेकर इस गोष्ठी की शोभा बढ़ाई थी।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में मॉरीशस के चार विद्वानों को सम्मानित किया गया, जिनमें एक हैं - डॉ० उदयनारायण गंगू।

डॉ० उदयनारायण गंगू ने बेजोड़ एवं निष्काम समाज-सेवा तथा हिन्दी भाषा-संस्कृति के क्षेत्र में अथक संघर्ष किया है। उनको उनकी भाषाई सेवाओं और उत्कृष्ट लेखन हेतु ***'अन्तर्राष्ट्रीय वागेश्वरी सम्मान'*** से विभूषित किया गया।

हिन्दी भाषा की निःस्वार्थ-सेवा करके आप हिन्दी माता के सपूत अवश्य हुए, इसमें संदेह तनिक भी नहीं है, परन्तु हमारे लिए आप आदर्श हैं।

श्री बालचन तानाकूर जी

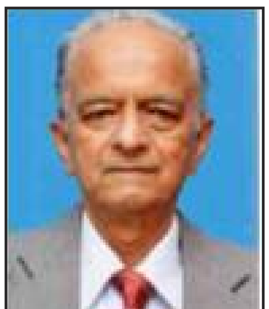

दूसरे आर्य समाजी विद्वान् श्री बालचन तानाकूर जी हैं, जिन्हें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के शुभावसर पर श्री विनय आर्य जी ने भारत की ओर से 'आर्य रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया ।

श्री बालचन जी ने दीर्घकाल तक आर्य समाज और हिन्दी भाषा की सेवा की है। आप सरकारी हिन्दी अध्यापक के पद से अवकाश प्राप्त करके जी-जान से आर्य सभा के कार्यों में हाथ बँटाने लगे। 'आर्योदय' पत्र पर नियमित रूप से लिखते रहे हैं। इस समय आप आर्य सभा के प्रधान पद से कार्यरत हैं। आप बड़े ही समर्पित समाज-सेवक हैं। आपको पहले भी कई बार सेवा का सम्मान प्राप्त हुआ है।

श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण

श्रीमती रामचर्ण जी को आर्य सभा की प्रथम महिला प्रधान बनने का गौरव

प्राप्त हुआ। आप सरकार की ओर से एम.एस.के और आर्य सभा की ओर से 'आर्य भूषण' की उपाधि से विभूषित हैं। 'अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन' के अवसर पर आप को 'आर्य रत्न' की उपाधि प्रदान की गई। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह सम्मान आपके वर्षों की समाज-सेवा का प्रतिफल है। आपने विशेष रूप से महिलाओं के बीच में सेवा-कार्य किया है। कई बार आर्य महिला मण्डल के प्रधाना-पद को सुशोभित किया है। वैदिक धर्म में आपकी बड़ी निष्ठा है। आप भारत में आयोजित अनेक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों में सम्मिलित हो चुकी हैं ।

श्री बिसेसर राकाल जी

श्री बिसेसर जी भी भारत की ओर से विभूषित हुए। आप बहुत लम्बे समय से आर्य

समाज की सेवा स्थानीय, प्रान्तीय और राष्ट्रीय स्तर पर करते आ रहे हैं। आप आर्य सभा के पुस्तकाध्यक्ष हैं। प्रतिवर्ष भारत से हज़ारों वैदिक पुस्तकें मँगाते हैं। उन पुस्तकों की बिक्री कराना, उनका हिसाब-किताब रखना। आपका उत्तरदायित्व है। गत पन्द्रह वर्षों में आपने लाखों रुपये का वैदिक साहित्य पाठकों के हाथों में पहुँचाया है। आप बड़े विनम्र आर्य पुरुष हैं। दैनिक अग्निहोत्र नियमित रूप से करते हैं।

उपर्युक्त चारों आर्य सेवकों को हमारी शत-शत बधाई है। क्या ही अच्छा हो, यदि हम भी आप ही लोगों का पदानुसरण करें।

२०१३ का सम्मेलन सफल रहा

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न

आर्य समाज के सौ साल के इतिहास में अनेक महासम्मेलन सम्पन्न किए गए। सर्वप्रथम १९२४ में दयानन्द जन्मशती के मौक़े पर सम्मेलन किया गया होगा। आज उसको याद दिलाने वाला कोई जीवित नहीं है, इतिहास के पन्ने भी ग़ायब है।

फिर १९२५ में भी आर्य समाज की अर्द्ध शताब्दी मनाई गई, जब विद्वान् आर्य प्रचारक मोरिशस पधारे हुए थे और उनका ठहराव इस टापू में करीब एक साल का रहा। वे थे श्री मेहता जी जैमिनी ।

उसके बाद काफ़ी लम्बे समय तक सम्मेलन नहीं लगा। कारण अनेक रहे होंगे। पर मुख्य कारण था आर्य जगत में दो समाज का होना फिर द्वितीय विश्व युद्ध के साया का मँडराना ।

जबरदस्त आर्य विश्व महासम्मेलन सन् १९७३ में लगाया गया था जिसमें भाग लेने के लिए भारत से जलयान 'अकबर' द्वारा ५०० से अधिक प्रतिनिधि आए हुए थे। पश्चात् १९८०, ८६, ९०, ९८, २००४, २००८ में सम्मेलन लगे ।

२०१३ का सम्मेलन सब दृष्टि से सफल रहा। यद्यपि भारत को छोड़कर और अन्य देशों के प्रतिनिधि नहीं आए क्योंकि नवम्बर के अन्त में आर्य सम्मेलन लगा था दक्षिण अफ़्रीका के डरबान शहर में । मोरिशस से ३० के ऊपर प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसकी अगवानी आर्य सभा के अंतरंग सदस्य रवीन गौड ने की थी।

२०१३ के सम्मेलन का आरम्भ हुआ गुरुवार दिनांक ०५.१२.२०१३ को सपहर ३.०० से ६.०० बजे तक। नवनिर्मित एल.पी. गोविन्दरामेन वैदिक सेंटर, यूनियन वेल, त्रुआ बुचिक के भव्य भवन के विशाल आँगन में एक लम्बा-चौड़ा शामियाना ताना गया था। उसकी सजावट देखते बनती थी।

प्रथम दिन के मुख्य अतिथि गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री राजकेश्वर परयाग जी थे, विशिष्ट अतिथि भारत के प्रोफ़ेसर रामप्रकाश एवं कला और संस्कृति मंत्री माननीय मुकेश्वर चुन्नी।

कार्यक्रम बहुत रोचक रहा। विशिष्ट अतिथियों के संदेशों के साथ – डी.ए.वी. डिग्री कोलिज के छात्र-छात्राओं द्वारा संगीत का कार्यक्रम जिसने श्रोताओं का मन मोह लिया।

कार्यारम्भ आर्य सभा के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर के स्वागत भाषण से हुआ। कार्य का संचालन सभा के महामंत्री, श्री हरिदेव रामधनी द्वारा हुआ और धन्यवाद समर्पण सभा के उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम ने किया।

मौके से फ़ायदा उठाकर एक विशेष स्मारिका एवं सम्मान प्रदान सभा के उपप्रधान श्री उदयनारायण गंगू द्वारा करवाया गया।

शुक्रवार दि० ६.१२.१३ को दो शैक्षणिक सत्र लगे पहला ९.०० - १२.०० बजे तक चला । मुख्य विषय था – भारत के बाहर के देशों में भारतीय धर्मोपदेशकों द्वारा किए गए प्रचार कार्यों पर आलेख प्रस्तुत किए गए थे।

भोजन के अवकाश के बाद दूसरा सत्र शुरू किया गया। कार्य का संचालन डा० उदयनारायण गंगू ने किया। इस सत्र का विषय था भारतीय धर्मोपदेशों द्वारा सामाजिक कार्य जिसपर आलेख प्रस्तुत किए गये। आलेख कभी अंग्रेज़ी में तो कभी हिन्दी में पेश किये गये। पाँच बजे सत्र समाप्त हुआ।

शनिवार ता० ०७.१२.१३ को पहला सत्र शुरू हुआ ८.३० बजे से १३.०० बजे तक। आलेख आधारित था महिलाओं के उद्धार पर। कार्य की संचालिका थी - आर्य सभा के महिला मण्डल की अध्यक्षा। मोरिशस की विदुषी महिलाओं एवं पंडिताओं द्वारा सारगर्भित पेपर पेश किये गये।

शनिवार के दूसरे सत्र का विषय था हमारी नयी पीढ़ी के सामने की चुनौतियाँ। अध्यक्षा श्रीमती पूनम तिलकधारी (बैरिस्टर) मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री डा० बसन्त कुमार बनवारी थे। कार्य का संचालन मोरिशस आर्य युवक संघ के मंत्री श्री धरमदेव थे। आलेख प्रस्तुत करने वालों में भारत और मोरिशस दोनों ओर से। हमारे युवक-युवतियों को सुनकर हमारी आशा बढ़ गयी ।

समापन समारोह रविवार ८.१२.२०१३ को समय ७.०० से १२.०० बजे तक ।

७.०० से ९.०० बजे तक परिवहनों की एक रैली निकाली गई नुवेल फ्रांस से लेकर यूनियन वेल तक वहाँ पहुँचते ही यज्ञ से आधे दिन का कार्यक्रम शुरू हुआ। तत्पश्चात् सभा प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर द्वारा सभी आगन्तुकों का औपचारिक स्वागत हुआ। उसके अनन्तर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रतिनिधित्व करते हुए श्री विनय आर्य (उप-महामंत्री) का उच्च कोटिका संदेश हुआ जिसमें उन्होंने उक्त केन्द्र को एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र में परिणत करने की माँग की।

कार्य का संचालन सभा के महा मंत्री द्वारा और धन्यवाद समर्पण डा० रुद्रसेन निऊर मान्य प्रधान द्वारा याद रहे शुक्रवार को अन्त में संगीत और अग्निहोत्र का कार्यक्रम सावान आर्य ज़िला परिषद् और शनिवार को ग्राँ पोर आर्य ज़िला परिषद् के सदस्य-सदस्याओं पुरोहितों द्वारा सम्पन्न हुआ।

डॉ० उदयनारायण गंगू ने 'वेद पीयूष' दिया हमारे हाथों में

श्रीमती शान्ति मोहाबीर, एम.ए.

डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज, पाई में शनिवार ३० नवम्बर २०१३ को दो प्रभावशाली कार्यक्रमों का आयोजन किया गया – एक 'प्रभु भोला भवन' का नामकरण और दूसरा 'वेद पीयूष' का लोकार्पण। 'वेद पीयूष' डॉ० उदय नारायण गंगू द्वारा विरचित एक निबंध-संग्रह है ।

यह ग्रंथ दो भागों में विभक्त है – पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध। पूर्वाध में डॉ० गंगू के निबंध संकलित हैं। इस पुस्तक के उत्तरार्ध में डॉ० गंगू की सुपुत्री डॉ० माधुरी रामधारी के रेडियो-भाषण संगृहीत हैं।

'अशोक मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश' में वेद पीयूष और निबंध के अर्थ निम्न प्रकार से दिये गए हैं – 'वेद' का अर्थ है – सच्चा और वास्तविक ज्ञान, श्रुति। 'पीयूष' का अर्थ है - अमृत, सुधा, जल, दूध, पृथ्वी। निबंध का अर्थ है – किसी विषय का वह सविस्तार, विवेचन, जिसमें उससे संबंध रखनेवाले अनेक मतों, विचारों, मन्तव्यों आदि का तुलनात्मक और पांडित्यपूर्ण विवेचन हो।

अंग्रेज़ी में निबंध को 'एसे' (Essay) कहते हैं। निबंध आधुनिक हिन्दी गद्य की सबसे प्राचीन विधा है। उन्नीसवीं सदी से पहले निबंध नहीं लिखे जाते थे। पत्र-पत्रिकाओं के जन्म के साथ ही निबंध का आविर्भाव माना जाता है।

भारतीय साहित्य में हो या यूरोपीय साहित्य में निबन्धों का आरम्भ पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही हुआ, परन्तु पत्र-पत्रिकाओं में मुख्य रूप से लेख छपते हैं – यह उल्लेखनीय बात है। हाँ यह बात अलग है कि उन लेखों में निबन्ध के एकाध लक्षण उभर आते हैं।

हिन्दी साहित्य में निबंध का उद्भव भारतेन्दु युग से माना जाता है। इस युग में बहुत सारी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ और जितने निबंधकार इस युग में हुए वे किसी-न-किसी पत्र-पत्रिका के संपादक भी थे।

डॉ० उदयनारायण गंगू भी संपादक हैं। आप 'आर्योदय' के प्रधान संपादक हैं। लेख लिखते-लिखते लेखक के निबंधकार का व्यक्तित्व पूर्णरूप से विकसित होकर सामने आ गया । प्रतिभा, व्युत्पन्न शक्ति और अभ्यास - भारतीय काव्यशास्त्रियों के अनुसार इन तीनों की उपस्थिति में साहित्यकार साहित्य-रचना करने में सक्षम होता है।

'वेद-पीयूष' पढ़कर देखिए। निबंधकार में प्रतिभाशाली हैं ही, उनका गहन शास्त्रज्ञान तथा अनवरत अभ्यास भी इस निबंध-संग्रह में द्रष्टव्य है। विषय, विचार, भाषा-शैली, चिंतन आदि सभी दृष्टियों से 'वेद-पीयूष' एक उच्च कोटि का प्रौढ़ निबंध-संग्रह है। निबंधों के विषय गंभीर हैं। जहाँ वेद और ऋषियों के विचारों की व्याख्या हो रही हो, वहाँ अल्हड़पन कदापि हो ही नहीं सकता है।

कई निबंधों में विचार के साथ भाव की भी प्रधानता देखी जा सकती है। उदाहरणार्थ - 'नारी का सौजन्य' और 'भुवनधारिणी नारी'। निबंधकार लिखते हैं- 'नारी नर का जीवन है।' साहित्य की छात्रा होने के नाते, नारी की गरिमा से संबंधित छायावादी कवियों की निम्न पंक्तियाँ स्वतः स्मरण हो आती हैं –

यदि स्वर्ग कहीं है पृथ्वी पर
तो वह नारी के उर के भीतर।
(पन्त)

X X X X

नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो।
(प्रसाद)

उक्त पदों में नारी को स्वर्ग तथा श्रद्धा कहा गया है। डॉ० उदयनारायण गंगू ने नारी को सम्राट्, अधिपत्नी, राज्ञी आदि विशेषणों से विभूषित किया है।

इस निबंध-संग्रह में विद्यमान हरेक निबंध मूल्यों से भरपूर है। एकता, प्रेम, सद्भावना, कर्त्तव्यपरायणता, जैसी शिक्षाप्रद बातों से ये निबंध सराबोर हैं ।

वेदों के मंत्रों, उपनिषदों के उद्धरणों, उच्च कोटि के पदों आदि से ओत-प्रोत 'वेद-पीयूष' 'लोक-हिताय' की भावना से रचित है। लेखक की भाषा शिष्ट एवं शैली उत्कृष्ट है।

'वेद-पीयूष' डॉ उदयनारायण गंगू का सुधा-सार है।

वार्षिकोत्सवों का मौसम

एस. प्रीतम

नवम्बर और दिसम्बर के महीनों में हिन्दी स्कूलों के वार्षिकोत्सवों की बौछार होती है। कभी-कभी एक ही इतवार को चार-पाँच उत्सव होते हैं। गत रविवार ता० २४.११.१३ को चार उत्सव मनाए गए । मुझे दो अवसरों में बुलाया गया था। एक बोनाकेई के विरजानन्द हिन्दी पाठशाला का वार्षिक उत्सव में और दूसरा शामुनी की हिन्दी पाठशाला के ५० वें उत्सव में। आर्य सभा के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर और उपप्रधान डा० उदयनारायण गंगू बोनाकेई और मैं, दूसरा उपप्रधान शामुनी के उत्सव में सम्मिलित हुए थे। वहाँ मिनिस्टर एरवे एमें, सावान ज़िला परिषद् के प्रधान श्रीधर जगरनाथ, पूर्व स्वास्थ्य मंत्री श्रीमती माया हनुमानजी, डा० दमर (पिता/पुत्र) उपस्थित थे। बारी बारी से सभी महोदय व महोदया के संक्षिप्त भाषण हुए। बच्चों द्वारा रोचक एवं सुन्दर कार्यक्रम पेश किये गए। उनके द्वारा पेश किये जा रहे सांस्कृति कार्यक्रमों को देखकर उपस्थित बच्चों के अभिभावकों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उनकी मुखाकृति देखकर उनकी प्रसन्नता का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। भारी वर्षा के बावजूद समारोह सफल रहा।

आर्य महासम्मेलन की सफलता

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन लगभग १३०० आर्य सदस्यों की उपस्थिति में इस वर्ष युनियन वेल त्रवाबुतिक के श्रीमती एल.पी. गोविन्दारामेन वैदिक केन्द्र में दिनांक ५ दिसम्बर २०१३ को किया गया था और समापन आठ दिसम्बर को बड़ी सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ था।

आर्य महासम्मेलन का कार्यक्रम डॉ० उषा शर्मा,'उषस्' के आचार्यत्व में वरिष्ठ पण्डित-पण्डिताओं सहित ध्वजारोहन और वृहदायज्ञ से शुभारम्भ किया गया था।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि मॉरीशस के राष्ट्रपति महा-महिम राजकेश्वर परयाग जी थे और विशिष्ट अतिथि श्रद्धेय प्रो० रामप्रकाश जी, सांसद राज्यसभा, हरियाना भारत के थे। मौक़े पर कला और संस्कृति मन्त्री माननीय मुकेश्वर चूनी जी और पी.पी.एस माननीया प्रतिभा भोला जी उपस्थित थे।

उस समारोह में आर्य सभा के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और महामन्त्री श्री हरिदेव रामधनी जी ने कार्य का संचालन किया था। उस उपलक्ष्य में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली की ओर से श्रीमान बालचन्द तानाकूर जी को और श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण जी को 'आर्य रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया था, साथ ही श्री बिसेसर राकाल जी को 'आर्य भूषण' की उपाधि से विभूषित किया गया। उद्घाटन समारोह में महामहिम राजकेश्वर परयाग जी तथा प्रो० रामप्रकाश जी के संदेशों से सभी लोग अति प्रभावित हुए थे। माननीय मुकेश्वर चूनी जी तथा माननीया प्रतिभा भोला जी के संदेश भी सारगर्भित थे। भजन मण्डलियों के भजन अति लोकप्रिय थे। प्रथम दिन के कार्यक्रम में 'एल०पी० गोविन्दारामेन वैदिक सेंटर' का उद्घाटन महत्वपूर्ण था, जिसका पटावरण महामहिम राजकेश्वर परयाग जी के कर कमलों द्वारा किया गया था उसी अवसर पर एक स्मारिका का लोकार्पण भी किया गया था।

अन्त में प्रीतिभोज द्वारा सभी अतिथियों का सत्कार किया गया था। आर्य महासम्मेलन समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए भारत से श्री विनय आर्य जी के प्रतिनिधित्व में स्वामी धर्मदेव जी, आचार्य आशीष जी, आचार्य अखिलेश जी, डा० ओ३मप्रकाश अग्रवाल जी, श्री विश्वपाल जयन्त जी तथा अन्य विद्वतमण्डल पधारे हुए थे।

दिनांक ६ दिसम्बर को लगभग १००० व्यक्तियों की उपस्थिति में कार्यक्रम का आरम्भ अग्निहोत्र से किया गया था। फिर प्रो० रामप्रकाश जी की उपस्थिति में और प्रोः सुदर्शन जगेसर जी की अध्यक्षता में प्रथम शैक्षणिक सत्र चलाया गया था – विषय था – भारतेतर देशों में भारतीय धर्मोपदेशकों का आर्य समाज के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में योगदान । आलेख प्रस्तुत करने वाले लोगों के आलेख शिक्षा प्रद थे।

उसी दिन सायंकाल में द्वितीय शैक्षणिक सत्र श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। शनिवार ७ दिसम्बर को अग्निहोत्र और प्रार्थना के बाद तृतीय सत्र श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण 'आर्य रत्न' की अध्यक्षता में आरम्भ किया गया था, जिसके दौरान आलेख प्रस्तुत करने वाले विद्वान्-विदुषियों ने आर्य समाज द्वारा महिलाओं के सर्वांगीण उद्धार पर प्रकाश डाला।

दोपहर को श्रीमती पूनामा सुकन जी की अध्यक्षता में चतुर्थ सत्र आर्य युवा सम्मेलन से सम्बन्धित था। उस सत्र में युवा वर्गों के सम्बन्ध में आलेख पढ़ने वालों ने अपना-अपना विचार प्रस्तुत किया। जो अति सराहनीय थे। अन्त में भजन और अग्निहोत्र से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का समापन दिनांक ८ दिसम्बर को रैली से शुरू किया गया था, जिसमें अनेक वाहनों ने रैली की शोभा बढ़ाई। फिर यज्ञ ब्रह्मा डॉ० उषा शर्मा एवं पुरोहित-पुरोहिताओं सहित यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद कार्यक्रम आरम्भ किया गया था। उस समारोह के मुख्य अतिथि हमारे देश के उपप्रधान मन्त्री माननीय अनिल कुमार बेचू जी थे और विशिष्ट अतिथि शिक्षा मन्त्री माननीय वसन्तकुमार बनवारी जी थे। उस दिन सभी भारतीय प्रतिनिधियों का स्वागत आर्य सभा द्वारा किया गया था। भजन, संदेश आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए थे। हमारे मुख्य अतिथि माननीय अनिल कुमार बेचू जी और शिक्षा मन्त्री माननीय वसन्त कुमार जी के संदेश अति सारगर्भित थे। प्रो० रामप्रकाश जी का प्रवचन बड़ा प्रभावशाली था तत्पश्चात् चन्द प्रस्ताव डा० उदयनारायण गंगू जी द्वारा प्रस्तावित हुए जो सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए। अन्त में आर्य सभा के उपप्रधान डा० रुद्रसेन नीऊर जी ने महासम्मेलन की सफलता निमित्त सभी लोगों के योगदान के लिए धन्यवाद दिए।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन में एल.पी. गोविन्दरामेन वैदिक सेंटर की शोभा देखकर समस्त अतिथि बहुत आकर्षित हुए थे। सभा द्वारा आयोजित प्रदर्शनी से अति प्रभावित हुए थे। प्रस्तुत कार्यक्रमों को लोगों ने पसन्द किया। महा सम्मेलन के आयोजन पर गर्व महसूस किया और चारों दिनों की भोजन व्यवस्था से संतुष्टि प्रकट की थी। सचमुच ही इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन की महत्ता और सफलता हमारे हृदय में दीर्घकाल तक एक अमिट छाप छोड़ जाएगी।

एक दर्शक

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu

प्रधान सम्पादकः डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न

सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,*पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,*पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम*

Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

आवश्यक सूचना

इच्छुक छात्र-छात्राओं को सूचित हो कि गुरुवार १६ जनवरी २०१४ से 'धर्म भूषण', 'धर्म रत्न' और नई परीक्षा 'सिद्धान्त वाचस्पति' की पढ़ाई शुरू हो रही है ।

दिन **: प्रति वृहस्पतिवार ।**
समय **: साढ़े दस से साढ़े चार तक ।**
स्थान **: डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज ।**

अर्हताएँ

धर्म भूषण परीक्षा के लिए :

(i) हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा में उत्तीर्ण
(ii) अजमेर से 'विद्या विशारद परीक्षा में उत्तीर्ण,
(iii) कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से S.C. में हिन्दी और हिन्दुइज़्म में उत्तीर्ण अथवा
(iv) 'सिद्धान्त रत्न' परीक्षा में उत्तीर्ण

धर्मरत्न परीक्षा के लिए :

(i) मध्यमा परीक्षा में उत्तीर्ण,
(ii) H.S.C में हिन्दी और हिन्दुइज़्म परीक्षा में उत्तीर्ण अथवा
(iii) धर्म भूषण परीक्षा में उत्तीर्ण

'धर्म वाचस्पति' परीक्षा के लिए :

धर्म रत्न/विद्यावाचस्पति/सिद्धान्त शास्त्री, *अथवा* उत्तमा में उत्तीर्ण छात्र-छात्राएँ

'धर्म वाचस्पति' परीक्षा के लिए पाठ्य पुस्तकें -

प्रथम प्रश्न पत्र - वैदिक सिद्धान्त पर आधारित
पाठ्य पुस्तकें : व्यवहार भानु एवं प्रश्नोपनिषद्

द्वितीय प्रश्न पत्र - अनुवाद पर आधारित - संस्कृत से हिन्दी
पाठ्य पुस्तकें : (i) आर्याभिविनय (ii) योगदर्शन (iii) विदुर नीति

तृतीय प्रश्न पत्र - कर्मकाण्ड पर आधारित
पाठ्य पुस्तकें : (i) संस्कार विधि (ii) संस्कार चंद्रिका (iii) यजुर्वेद

चतुर्थ प्रश्न पत्र - भाषा पर आधारित
पाठ्य पुस्तकें : (i) हिन्दी व्याकरण (ii) निबंध पीयूष

पंचम प्रश्न पत्र - संस्कृत
संज्ञा-सर्वनाम शब्द रूप, लिंग-वचन, क्रिया, संधि एवं समास
पाठ्य पुस्तकें - (i) *सरल संस्कृत - आचार्य सोमवेद शास्त्री*
(ii) *संस्कृत पाठ्य पुस्तकें भाग १, २ और ३ – डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*

कृपया डी.ए.वी कॉलिज की सचिव श्रीमती निर्मला सुकर जी को अपना आवेदन पत्र भेजिए । पता है – *D.A.V. Degree College, M2 Lane,*
Avenue Michael Leal, Pailles
Tel No. : 57601105

दीपावली के मौक़े पर सम्मानित सदस्य

एस. प्रीतम

आर्य सभा मोरिशस लम्बे समय तक निस्वार्थ सामाजिक सेवा करने वाले अपने सदस्यों को, हर साल दीपावली एवं ऋषि निर्वाण के शुभावसर पर, सम्मानित करती है। यह सम्मान प्रदान की परिपाटी तब शुरू हुई थी जब मोरिशस अभी गणतंत्र नहीं बना था। स्वतन्त्र मोरिशस अपने सेवकों को सर, सी.ई.बी, ओ.बी.ई, एम.बी. के खिताब से सम्मानित करता था।

मुझे अभी तक साफ़ साफ़ स्मरण है, राष्ट्रकुल के महासचिव माननीय सोनी रामफल आप्रवासी भारतीय त्रिनिडाड टोबेगो के मूल निवासी मोरिशस की यात्रा पर आए हुए थे। उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई थी आर्य समाज जैसी सामाजिक संस्था ने अपने सदस्यों को सम्मानित करने की पहल की थी। हमारी सरकार ने गणतन्त्र बनने के बाद ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदत्त रिवाज़ को देना बन्द कर दिया ।

आर्य सभा ने आरम्भ से ही आर्य भूषण के सम्मान से विभूषित करना आरम्भ किया था। शुरू से आज पर्यंत हम बीसों को सम्मानित कर चुके हैं ।

इस साल जिन तीन सेवकों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया वे हैं :-

१. श्रीमती सती रामफल
२. श्री सोनालाल नेमधारी
३. पं० यशवन्तलाल चूड़ामणि

ज़िला स्तर पर निम्न लोगों को शाल और शिल्ड प्रदान करके सम्मानित किया गया ।

१. श्री धनिश्वर चकोरी (रिव्येर जू रॉंपार) २. पं० जीवन पोखन (फ्लाक) ३. श्रीधर जगरनाथ (सावान) ४. श्री दयानन्द रामा (रिव्येर न्वार) ५. श्री सुग्रीम रिझो (ग्राँ पोर) ६. श्री शिवलाल ताकू (पाम्प्लेमूस) ७. श्री सोनालाल रामदोस (प्लेन विलियेम्स) ८. श्री भरत कुमार हरि (पोर्ट लुईस) ९. श्रीमती भगवन्ती घूरा (मोका)

१५ दिसम्बर

एस. प्रीतम

१५ दिसम्बर २०१३ धरती लोक के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों से अंकित रहेगा दक्षिण अफ़्रीका के प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति श्री नेलसोन मंदेला की अन्तिम क्रिया उनकी जन्म भूमि कूनू में हुई। इस भूमि के वर्तमान इतिहास शायद ही कोई व्यक्ति होगा जिनको २७ लम्बे वर्षों तक क़ैद खाने में रखा गया। क्षमा प्रदान करने वालों में उन्हें ईशामसीह से तुलना की जा सकती है तो अहिंसा की दृष्टि से सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी से उनकी तुलना की जा सकती है। जिन गोरों ने उनकी तीन सन्तानों की अन्त्येष्टि क्रियाओं में उपस्थिति न देने दिया गया। २७ वर्षों के पश्चात् रिहा होने के बाद वे उन्हीं गोरों को माफ़ कर दिया। इन्हीं सब कारणों से उन्हें अफ़्रीका का गांधी कहा गया। जैसे अफ़ग़ानी नेता खाँ जफर खाँ तो सीमान्त गांधी कहा गया था और मार्टिन लूयर किंग को अमेरिका का गांधी कहा गया था।

१५ दिसम्बर को ही मोरिशस के राष्ट्रपिता डा० सर शिवसागर की वर्षी थी जिसे हम पुण्य तिथि भी कहते हैं । सन् १९८५ में ८५ वर्ष की आयु में रेज्वी के महल में उनका शरीरान्त हुआ था। वहीं से उनकी अर्थी उठाई गई थी। राजकीय सम्मान के साथ पाम्प्लेमूस बोटानिकल बाग़ में पूरी धार्मिक रीति के साथ पार्थिव शरीर को भस्म किया गया था।

१५ दिसम्बर २०१३ की विशेषता इस बात को लेकर भी कम से कम आर्य समाज के इतिहास में याद रहेगा कि उस दिन हमारी १० शाखा समाजों में कार्यक्रम रखे गए थे जिनका विवरण निम्न प्रकार है –

१. रिव्येर दे क्रेओल हिन्दी पाठशाला
२. न्यु ग्रोव मोर्सेल्माँ आर्य मंदिर हिन्दी पाठशाला
३. वेद भवन आर्य समाज हिन्दी पाठशाला
४. मार ताबा आर्य समाज हिन्दी पाठशाला
५. रिव्येर दे क्रेओल आर्य समाज हिन्दी पाठशाला
६. रिव्येर दे आँगी आर्य समाज हिन्दी पाठशाला
७. बेल ओंब्र आर्य समाज शताब्दी समारोह
८. शेमें ग्रेनियें फूलबसिया बाबूराम आश्रम की चौथी वर्षगाँठ
९. लावेनिर आर्य मंदिर में आयोजित चार दिवसीय यज्ञ की पूर्णाहुति
१०. प्लेन दे रोश के चार दिवसीय यज्ञ की पूर्णाहुति ।

इन दस समारोहों में से तीन में मुझे सम्मिलित होने का मौका प्राप्त हुआ। सबसे पहले प्रातः दस बजे के आस-पास मैं रिव्येर दे आँगी आर्य मंदिर पहुँचा जहाँ उत्सव जारी था। बच्चों द्वारा रंग-बिरंग के कार्यक्रम पेश किये जा रहे थे। स्कूली बच्चे नृत्य, भजन-कीर्तन, वार्तालाप आदि मंचित हो रहे थे। मेरा एक लघु भाषण हुआ तत्पश्चात् प्रमाण-पत्र एवं पारितोषिक वितरण करवाये गये। समारोह के अन्त तक रहा।

वहाँ से रिव्येर जू पोस्त की हिन्दी पाठशाला में जाकर भाग लिया। यहाँ का समारोह बहुत ही आकर्षक रहा। आर्य मंदिर अभीभावकों एवं दूर करीब के आमंत्रितों से खचाखच भरा था। पिछले सम्मेलन में भाग लेने आये हुए प्रतिनिधियों में से कुछ लोग उपस्थित थे जिनके द्वारा भाषण हुए। मुझे वहाँ से शेमें ग्रेनियेर के आश्रम की चौथे स्थापना दिवस में उपस्थित होना था।

चौथी वर्षगांठ में भाग लिया - चुनाव क्षेत्र नवम्बर १४ के प्रतिनिधि और स्थानीय प्रशासन मंत्री एर्वे एमें, संसद सदस्य और पूर्व स्वास्थ मंत्री माया हनुमान जी, सावान ज़िला परिषद् का अध्यक्ष श्रीधर जगरनाथ और आर्य सभा के प्रतिनिधित्व करते हुए माननीय प्रधान डा० रुद्रसेन निऊर, प्रधान बालचन्द तानाकूर उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम और राजेन्द्र प्रसाद रामजी अन्तरंग सभासद ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत ।।

हे ईश सब सुखी हों कोई न हो दुःखारी।
सब हों नीरोग भगवन् धन-धान्य के भण्डारी।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुःखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी ।।

आर्य सभा मोरिशस
के
प्रधान एवं सभी अन्तरंग सदस्य

नूतन वर्ष तथा मंगलमय मकर संक्रान्ति २०१४
के पावन अवसर पर
आपको तथा आपके समाज के सभी सदस्यों एवं परिवारों को शुभ कामनाएँ समर्पित करते हैं ।

१,महर्षि दयानन्द गली,
पोर्ट लुई

Nutan Varsha
evam
Sankranti Abhinandan

Sarve Bhavantu Sukhinah
Sarve Santu Niramaya
Sarve Bhadrani Pashyantu
Ma Kaschit Dukhabhag Bhavet

May all feel happy and comfortable
May all be free from disease
And enjoy a sound health.
May we see only the good around us
And may no one suffer.

The President and Members of the Arya Sabha Mauritius wish you a very happy & prosperous

New Year
and
a joyful Makar Sankranti 2014

1, Maharshi Dayanand Street,
Port Louis

INTERNATIONAL ARYAN CONFERENCE : 2013

S/N	NAMES	AMOUNT
	Balance B/F Rs	*344,777,00*
1.	*COMPANIES /FIRMS*	
	Mr Maigrage Goomany	50,000.00
	Mohunlall Mohith Foundation	15,000.00
	Soge International Com. Ltd	5,000.00
2.	*MANAGING COMMITTEE - A S M*	
	Dr Roodrasen Neewoor	4,000.00
	Mr Bholanath & Miss Devarshi Jeewuth	14,800.00
3.	*PLAINE WILHEMS A.Z.P*	
	Belle Rose Arya Samaj	1000.00
	Reunion Vacoas AS	1200.00
	Ollier A S	1100.00
	Treffles A S	1000.00
4.	*PAMPLEMOUSSES A.Z.P*	
	Morcellement St Andre AMS	650.00
5.	*RIVIERE DU REMPART A.Z.P*	
	Rempart & Trois Bras AS	500.00
	Roche Noire A S -107	500.00
6.	GRAND PORT A.Z.P	2,600.00
	L'Escalier A S - Ved Bhawan	1550.00
	Carreau Accassia A S	550.00
	Carreau Esnouff	500.00
	Petit Sable A S	800.00
7.	FLACQ A.Z.P	4,625.00
	Guruduth A M S- Laventure	1000.00
	Laventure A S - 245	525.00
	Poste de Flacq	500.00
	Caroline A S	500.00
	Caroline A M S	600.00
	La Forge A S	500.00
	La Gare A S	500.00
	Deux Freres A S	500.00
	Camp Raffia - Poste De Flacq	200.00
	Olivia A S	500.00
	Choisy A M S	650.00
	Camp Cassia - P De Flacq	500.00
	La tapie A S	1000.00
	Brisee Verdiere AMS	1000.00
	Ecroignard A S	300.00
	St Remy A M S	500.00
	Mission Cross Road -A M S	500.00
	Laventure A S	500.00
8.	SAVANNE A.Z.P	
	Britania A S	700.00
9.	BLACK RIVER A.Z.P	
	Bambous A S	1,500.00
10.	DAV COLLEGE MORC. ST ANDRE	
	Members of Staffs	4,500.00
11.	PUROHITS - A S M	
	Ach - Beetullah Ashock - Half month salary	5,250.00
	Pt Ramkhalawon Shivsungkur	2,000.00
	Pt Ravindra Pydegadu	2,000.00
	Pta Baurun SooreshaKumari	1,000.00
	Pta Koonja Lalita	1,000.00
	Pt Reejhaw Mangalprasad	1,000.00
	Pta Pockraj & others	3,675.00
	Pt Ramdonee	1,500.00
	Pt Basdeo Chunoo	500.00
	Pt Deoduth Mittoo	100.00
12.	MEMBERS	
	Members of the public c/o Mrs Ramchurn	11,750.00
	Anonymous	7,850.00
	Dr C.P Jhummun	5,000.00
	District Council of Grand Port	5,000.00
	Mr Vikash Nuckhady	5,000.00
	Members of the public c/o Pta Abeeluck	2,300.00
	Mr Domun c/o Pt Ramdonee	2,000.00
	Members of the public c/o Pta Hinchoo	1,825.00
	Members of the public c/o Pt Fakoo	1,100.00
	Members of the public c/o Pt M. Reejhaw	1,000.00
	Dr Mohith Jugdish	1,000.00
	Mr Deemul Buchoo	1,000.00
	Mr Bissessur Bissoondeo	1,000.00
	Mrs Tarini Teeluck	1,000.00

S/N	NAMES	AMOUNT
	Mr Rajnath Abeeluck	1,000.00
	Members of the public c/o Pta S.K. Baurun	1,350.00
	Members of the public c/o Pt Pydegadu	1,300.00
	Members of the Public	1,225.00
	Mr Kissan Narain	1,000.00
	Mrs Geeta Narain	1,000.00
	Mr & Mrs N Ghoorah	1,000.00
	Mr Robin Sonarane	1,000.00
	Mr Dinesh Sonarane	1,000.00
	Mr & Mrs Jeetendra Ghoorah	1,000.00
	Mr &Mrs Rajendra Kumar Ghoorah	1,000.00
	Mr Navin Cheetamun	1,000.00
	Mr Potygadu Bhoopun	1,000.00
	Mr Aubeeluck Kiransingh	1,000.00
	Mr Mudhoo Rajeshwar	1,000.00
	Mrs Jaymateea Hurnath	800.00
	Members of the public of Quartier Militaire A S	800.00
	Members of the public c/o Camp Carol - 252	750.00
	Members of the public of Belle Rose A S	650.00
	Members of the public c/o Smt Ramchurn	600.00
	Mr Ramdany Avinash	600.00
	Mrs Coormiah Parbatee	500.00
	Mr & Mrs Sailesh Ghoorah	500.00
	Mr Burtoo Sunil	500.00
	Mr & Mrs Shrawan Ghoorah	500.00
	Mr Damree Suryadeo	500.00
	Mr Peerthee Prem	500.00
	Mr Mohith Premchand	500.00
	Mr Amickchand kureemun	500.00
	Mr Pooroosoium Dinesh	500.00
	Mr Narain Sooresh	500.00
	Mrs Narain Indira	500.00
	Mr Satish & Mrs Indira Muttur	500.00
	Mr Ramdonee Vijay	500.00
	Mr Matabadal	500.00
	Mr Ramdonee Jagurnauth	500.00
	Mr Ram Daneshwar	500.00
	Mr Rakesh K Foolchand	500.00
	Mr Bundhun Suren	500.00
	Members of the public c/o Pta Nosib	400.00
	Mr Pauhaloo Nand	400.00
	Mr Baldeo Pauhaloo	300.00
	Mr Satish Pauhaloo	300.00
	Mr Ramdoss Sonalall	300.00
	Members of the public c/o Smt Ramchurn	300.00
	Mr Ramesh Boojawon	300.00
	Mrs Soomalee koonjbeharry	300.00
	Mr Pravesh Juttun	300.00
	Mr Gobardhun Bidianand	300.00
	Mr Geerdhani Kavi	300.00
	Mrs Jaswuntee Dookbunjun	200.00
	Mr Bhikaree Devraj	200.00
	Mr Premjeet Fowd	200.00
	Mr Balram Shamy	200.00
	Mr Prayag Ranjit	200.00
	Mr Mungroo Praveen	200.00
	Mrs Thacoori Savita	200.00
	Mr Mohun Vasudev	200.00
	Mr Fowd Premjeet	200.00
	Mr Pauhaloo Yuvansingh	200.00
	Mrs Palboteea Bisnauth	200.00
	Mr Guddah Karuna	200.00
	Mr Moonee Currooah	200.00
	Mr Ramsaha Dayanand	200.00
	Mr Santosh & Sachianand Bhujun	200.00
	Mr Rajnath Navin	200.00
	Mr Ramprasad Oree	200.00
	Mr Naiko Dewanand	200.00
	Mr Koondia Gaupaul	200.00
	Mr Sonwa Purran	200.00
	Mr Vijay Prakash Iramon	200.00
	Mr Jodhun Jaggar	200.00
	Mr Bheelooa Suresh	200.00
	Mr Calen Vijay	200.00
	Total	**550,377.00**

.... to be continued

एक बलिदानी का गार्हस्त जीवन

एस. प्रीतम

भारतीय इतिहास में कई एक व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने बुरी राहों से निकल कर जीवन की ऊँचाई पर पहुँच कर उदाहरण पेश किया है, जिनके कदमनक्शों पर चलकर हज़ारों लोगों ने अपना जीवन सँवारा है। उनमें स्वामी श्रद्धानन्द एक थे।

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। चार संतानों में वे सब से छोटे थे। इसलिए दुलार से पलने के कारण बिगड़ गए थे। इतने बिगड़ गए थे कि नास्तिक हो गए थे। यदि सन् १८७९ में प्रचार कार्य करते हुए बरेली न पहुँचते तो शायद कभी न सुधरने और न बृहस्पति से महात्मा मुंशीराम होते और न स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से संसार में प्रख्यात होते।

बड़े बाप के बेटे होने के कारण उनका विवाह एक रईस की सुपुत्री शिवदेवी से हुआ था। उसके भाई पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के नामी सदस्य और मुंशीराम के मित्र थे।

गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के बाद बिगड़ा जीवन चालू रहा। उसी जीवन में आगे बढ़ते हुए चार सन्तानें हुई। दो लड़कियाँ और दो लड़के। बड़ी लड़की का नाम वेद कुमारी और दूसरी का हेमलता था। तीसरी सन्तान हरिश्चन्द और सब से छोटे का नाम था इन्द्र जो आगे चलकर इन्द्र-विद्यावाचस्पति के नाम से प्रसिद्ध पत्रकार और भारतीय राजसभा के सांसद बनें।

मुंशीराम यद्यपि उच्च कोटि के वकील बन गए पर जीवन के सारे अवगुण पलते रहे। शराब पीना, मांस खाना, नृत्य में बराबर हिस्सा लेना दैनन्दिन जीवन का कार्य हो गया था।

एक रात वह नशे में चूर घर वापस आते हैं तो देखते हैं उनकी अर्द्धांगिनी शिव देवी उनके इंतज़ार में बिना भोजन खाए बैठी थी। पूछने पर पता चला कि पति के इंतज़ार में बैठी थी। पत्नी का पतिव्रत धर्म देखकर मुंशीराम जी का नशा रफ़ू चक्कर हो गया और तब से उनका जीवन ही बदल गया और पहले अच्छी राह के पथिक बन गए और आगे चलकर कल्याण मार्ग के पथिक के नाम से जाने गए। शायद इसीलिए कहते हैं हरेक महान् पुरुष के जीवन में पत्नी का बहुत बड़ा हाथ होता है।

पर उनका गार्हस्थ जीवन बहुत दिनों तक नहीं चला जब मुंशीराम ३२ वर्ष के हुए तो शिवदेवी का देहावशान हो गया उस वक्त बड़ी लड़की ८ वर्ष की थी और दूसरी लड़की हेमकुमारी ६ वर्ष की और शेष दोनों लड़के क्रम से ४ और २ वर्ष के थे। ३२ साल के गृहस्थी विधुर (रँडुआ) बन जाय और ऊपर से चार बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी।

यह तो अच्छा हुआ कि बच्चों की एक ताई थी जो निःसन्तान थी। उन्होंने चारों बच्चों की देखभाल लाड़-प्यार से किया और वेद कुमारी का विवाह बड़े सजधज के रश्मों रिवाज़ के साथ सजातीय वर से हुआ।

हम हरदम सुनते थे कि लाला मुंशीराम ने अपनी कनिष्ठ-कन्या हेमलता का अन्तरजातीय विवाह डा० सुखदेव के साथ करवाया था जब उनके हृदय में समाज सुधार की भावना पैठ गई थी। समाज व परिवार की ओर से कड़ा विरोध के बावजूद अपने संकल्प में अटल रहे और विवाह करवा के दम धरा। इस बात का विवरण उनके सम्माननीय इन्द्र विचसपति की कलम से हमें पढ़ने को मिला।

ऐसी बात हमें मोरिशस के आर्य समाज के प्रारम्भिक इतिहास में भी देखने-सुनने को मिलती है। मोरिशस आर्य समाज के संस्थापक त्रिमूर्तियों में से एक श्री खेमलाल लाला ने अपने पिता की मृत्यु की पौराणिक रश्मि-रिवाज़ में हिस्सा लेने से इनकार कर दिया था। उन्हें समाज से बहिष्कृत होने का भी तनिक डर नहीं था।

इसी प्रकार के अनेक उदाहरणों में से एक उदाहरण है काँ फूक्रो निवासी स्व० दुखराम नन्दलोल ने मुझे सुनाया था। उनकी लड़की का विवाह एक सनातन धर्मी वर के होने के कारण उन्होंने पिता की हैसियत से खड़ा होने से इन्कार कर दिया था।

आज इस दिशा में कुछ ढीलापन वर्ता जा रहा है। इसलिए हमारे समाज में पुनः पाखण्ड का प्रवेश वेग से हो रहा है।

STOP WAITING-JUMP INTO THE MARRIAGE-CARRIAGE

Crossed the age of 30. Not yet married. Stuck into the celibate's club. Come on. Is your stream of emotion shallow and dry? Is it choked with rejection, dejection and depletion? Let the flood of emotion flush out the blockages so that it may flow again with full vigour and vitality. Welcome pring into your life, so as to make it colourful and fruitful.

God is love. Love is God. Love is the basis of all creation. Love governs us all. Without love life becomes a dry river or a burning desert. We are not made of stone and wood, but of flesh and bones. We have no water, but blood circulating in our veins, therefore the process of life revolves around the emotion—"love in motion".

Without love there is no life, no creation, no admiration, no attraction, no literature, no song, no philosophy and no devotion. Life is sustained and the soul is nourished by love. If marriageable boys and girls postpone or avoid marriage for any reason, they are trying to break and stop the normal process of human growth, just creating numerous ills, evils and imbalance in the family and society. Life is incomplete without a partner.

Living by self-denial or abstinence is totally wrong and this has created abnormality in society. For ages, undisciplined youth, Catholic priests and sacred idiots have created a lot of problems of sexual immorality. Living by suppression is not good either, because suppression causes depression and instability. A few have not married, because they have not found a perfect partner. Why look for perfection? Nobody is Mr Perfect or Miss Perfect. Why not go for acceptance, adjustment and fLilfilment? Gods, rishis, sages, kings, philosophers and scientists are all married.

All body parts and organs have their specific functions. Why do you want to castrate yourself? Why do you want to amputate one leg? Let animals, even plants pollinate, multiply and fructify. When alive, don't act like dead wood and stone.

Last point. The broken-hearted or the rejected lovers or the divorcees or the widows should not stand still and regret the past, but resolve to replay the game of life and become happy lovers again. Mistakes and accidents teach valuable lessons. Loving, sharing and caring are life commandments which are wired in the brain and emotions of all living beings. Move from human love to divine love. Family life is no roadblock to divinity.

Dipnarain Beegun

Paper Presented by : Pandit Yaswantlall Chooromonay, *Arya Bhushan* at the WORLD VEDIC CONFERENCE

DURBAN —SOUTH AFRICA

Topic : Mission of Vedic Missionaries

In front of Guru Virjanand, Swami Dayanand took the vow that he would dedicate his whole life for the propagation of Vedic Culture and Vedic Knowledge. To ensure continuation of his mission, he founded the Arya Samaj movement with specific objectives. He adopted ten principles that depict clearly the aims and objectives of the Arya Samaj. All essential teachings and knowledge of the Vedas appear in those ten Principles

First, we have to understand that all teachings of the Vedas are concentrated around three basic elements, unborn, nonperishable and eternal; namely God, Soul and Matter - ईश्वर, जीव, प्रकृति. These three are the real basement upon which stands the whole Vedic Philosophy. These are, as well, the three basic causes of this present creation. So, our first mission is to dispel the wrong concept of several Gods and inculcate the right concept, that is, God the Creator is only one; formless, omnipresent and most powerful. That God only possesses the three divine qualities - real, conscious and blissful (सत्त, चित्त, आनन्द). The Soul is just real and conscious (सत्त, चित्त) whereas Matter is only real (सत्त). In the first and second principles of the Arya Samaj, Maharishi Swami Dayanand Saraswati Ji has given a clear description of God. During his Vedic campaign, Swami ji's discourses were mainly based on the oneness of God. After Swami ji, his disciples and other eminent missionaries carried out the follow up work almost all over the world.

Apart from the true knowledge of God, four other philosophies of the Vedas have been identified upon which Vedic Missionaries constantly ponder. Prominent Vedic scholars consider these to be the pillars of Veda. The first is welfare of the whole world (विश्वकल्याण). The second is Vedic law of actions (कर्म नियम). The third is equal opportunities to all (सम विकास) and the fourth one is Sacrificial deeds (यज्ञ). Our dedicated missionaries have that painstaking but noble and divine duty of enlightening the whole humanity by these four lights of the Vedas.

The knowledge of the Vedas is like the rays of the sun, impartial and without any kind of discrimination, showering their light over the whole world. God has not prescribed knowledge of the Vedas for any specific category of people, country, religion or belief but for all beings that constitute human race. In the sixth principle of the Arya Samaj, Swami Ji has depicted the idea of globalization for which the wh1e world is striving hard. We are all aware of the content संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, that is, the prime objective of this Samaj is the welfare of the whole world. The nature of the welfare also has been clearly stated - शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक - physical, spiritual and social welfare. This is a real challenge for the Vedic missionaries.

The law of actions, that is, कर्म नियम plays an important role in the existence of all human beings. Birth, life and death all influenced by the consequences of actions performed by individuals. The saying "as you sow so you reap" stands good. Positive deeds result in peace and happiness whereas negative deeds generate only pains and sorrow. Our missionaries usually pave the path of righteousness by which the whole humanity can attain the goal of human life. They have also the task of ensuring that everybody is treated equally, same opportunity of evolution is given to all (सम विकास).

The last philosophy of the Vedas mentioned before was yaj. This is considered to be the heart of the whole Vedic teachings. In order to sustain the existence of the whole creation, two types of yaj have been identified in the Vedas. One is the spiritual yaj constantly performed by God himself. This will last till complete dissolutionof the solar system. The second yaj is the worldly yaj that has been prescribed for all human beings. This comprises of the five daily mahayajs, namely Brahma yaj, Dev yaj, Pitri yaj, Balivaishwadev yaj and Atithi yaj. Through these yajs every individual can create the sense of unity, love, righteousness and respect among all.

Dedicated Vedic missionaries do not leave any stone unturned in that noble task of imparting true knowledge of the Vedas to the whole world. They consider that to be a sacred duty assigned to them by God with the main objective of ensuring a harmonious and positive evolution of everybody. International conferences, forums, workshops and other such activities are often organized to enhance the propagation of Vedic Wisdom throughout the whole universe. For years several learned and most respected missionaries have sacrificed their lives with a view to spreading Vedic light and thus have become a source of inspiration for the future generation. Swami ji's motto "back to the Vedas" is being held high by all the Vedic missionaries. May God bless them all.

हे नौजवान !

हे नौजवान !
तुम्हें तो है स्वाधीनता की खोज,
तुम्हें तो है अस्वीकार हर संकुचित सोच,
तो नौजवान तुम क्यों फिरते हो अंधेरे अधार्मिक पथ पर ?
तुम क्यों चलते हो मूर्ख बहकावे के इशारों पर ?

हे नौजवान !
जागो, उठो, आँखें खोलो !
ऋषि दयानन्द दर्शित वैदिक धर्म की ओर मुड़ो,
दृढ़ संकल्पों से स्थापित आर्य समाज से तुम जुड़ो !

इस पद्धति पर है सच्चे निराकार, न्यायकारी ईश्वर की उपासना,
प्राणायाम एवं सर्वोतम साधना से मन में भरना पवित्रता,
इसमें है सदा व्यक्तित्व का आदर,
ऊँच नीच कहकर कोई न करता निरादर।

तो नौजवान, आओ, आओ !
आर्य समाज के सहज ज्ञान मार्ग को तुम अपना लो,
और पाखंडी गुरुओं के मायावी पंजों से तुम मुक्त हो जाओ ।

वत्सला राधाकिसनु
(वत्सला आर्या)

SEASONS GREETINGS

The end of a period and the beginning of a new era is a cross-road on the timeline of all human beings where we review of our achievements and failures as well as take new resolutions.

Many choose to look only at success and play the ostrich game as regards to the lapses. Turning heads away from pitfalls does not mean that they do not exist. The reasonable person is always on a learning curve, i.e. learning from the past and the present in order to be better armed to face the future.

Ātma nirikshan (self-introspection) in the *Sat Sanatan Vedic Dharma* (the pristine Vedic philosophy) is a very important part of our daily activities. It empowers us to (i) identify our faults, weaknesses and/or limitations; (ii) delve into the causes ...what, why, when, where, which and how... things went wrong; and (iii) thus firmly resolve that we would not repeat mistakes. This aspect has been adopted in modern management which spells out that if we do things the way we are used to do we shall to get the same results.

The course of action is Choice! It is the first step and that can change everything. Choice stands at the cross-roads of our lives at all times, indeed a limitless opportunity to choose a new action, thought, feeling or behaviour... giving birth to a new reality, thus re-gear / re-paint our life.

Ishā vāsyamidam sarvam… (YajurVeda 40.1) enunciates that the Almighty is omnipresent and is at all times aware of our thoughts, speech and actions. Maharishi Patanjali has coined this concept in the Yog Darshan as *Ishwar Pranidhāna*. He elaborates that we all should submit ourselves to the divine guidance and be ever aware that God is at all times observing / paying attention /taking notice of all our demeanours. The law of Karma is inevitable! We have to bear the consequences of our actions, i.e. good actions leave positive imprints *(samskāras)* and face punishment for undesirable conduct.

We all have experienced divine guidance as an inner voice which strengthens our self-confidence, cheers and pushes us when we think, speak and act in a good way. That same inner voice at other times shatters our self-esteem, leave us in despair with a sense of guilt, restrain our inclination to indulge in deviant behaviours and leave us in despair with a sense of guilt. However, in utter disregard of that guidance we abandon the driver's seat and let the cravings for name and fame, undue support to kith and kin (lineage) as well as wealth to take over. Consequently, we more than often embark on unethical / improper thoughts, speech and actions.

The inner voice is our guide to the 'best' choices, the choices that we feel more passionate about, aligned to, enlivened and inspired by, choices that move us, speak to our heart, and take us towards bright futures. Choices may be small, big, easy or more challenging. When exercised with utmost care and discretion, choice becomes a powerful tool with which we create our reality, especially as it can steer and direct our beliefs, thoughts, feelings, imagination, focus, and so on. Regrettably, a vast number of choices we make are barely conscious, or we may fail to acknowledge them as the choices they indeed are. Habits, for example, are choices that have become more automatic, e.g. sleeping patterns, ways of communication, body language, job, daily routine, eating, etc.

Our actions are the most visible choices. At the subtle levels, thoughts, feelings, attitudes, values, etc. are invisible to others. These are where the rubber meets the road as these directly impact on our personality, deeds and inherent qualities. The right choice opens avenues for realisation of infinite possibilities for a new beginning, new direction and success. Like a pebble dropped into a pond, the ripples spread out to reach the family and society at large. The world would be a much better place to live, suffice we let ourselves be guided by the inner voice and make decisions relaying both the mind and the heart.

Like a ray of light passing through a hole, small at the entrance but wide at some distance away, one small choice made today that shifts our life by one degree will overtime lead to a future far brighter than where we may be currently standing. It surely opens up to a new path and life, new doorways, visions, people, horizons, places, and opportunities, new levels of love, happiness, health and success.

If we lack vision, passion, motivation or direction, we should think of how our gifts can be of service in some way. If we feel unclear or uninspired by choices, reflecting on how we may be of help to ourselves, others and the world would ignite possibilities. One of the greatest gifts we have to give the world is the gift of happiness. There are many ways we can give: our time, care, attention, love, money, information, support, appreciation, joy.

All the ups and downs of life remind us that both bright and dark phases exist in life. Looking at the world around, we learn very important life lessons: (i) Everything happens for a reason ... the law of Karma - a previous action which we do not recall; (2) Change is inevitable ... taken positively it yields a better position than where our previous foothold.

Those who choose to change for the better find light at the end of the tunnel. They are empowered to take important decisions independently, be stronger in rough and tough times, understand how the world works, differentiate between reality and illusion, and strike a healthy balance between being practical and emotional.

The next time we stand at the crossroad of making a choice, let's change our mindset and just give our best shot - not an easy task, but definitely an adventure to remember for life! That experience will change us as a person, and certainly for the better. Our outlook towards life and people will be much more positive and mature. The meaning of living life to the fullest and investing every second in something worthwhile will suddenly make more sense. We need to accept to change with open arms. Then only we will sail through the ocean of life smoothly.

At the threshold of the generally accepted New Year, may we dare to spend some time daily in introspection and remedy our flaws; may we listen to the inner voice before gearing our thoughts, speech and actions. **Choosing to undergo such change is good for us and for society at large!**

Best wishes for a happier and more satisfying life.

BrahmaDeva Mokoonlall
Darshan Yog Mahavidyalaya
Rojad, Gujarat, India

मन का स्वभाव

स्वामी विष्वङ्

अध्यात्म-मार्ग में मन का बहुत अधिक महत्व है, इस बात से इन्कार, कोई भी अध्यात्म-मार्गी नहीं कर सकता । **'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः'** इस संस्कृत वाक्य का कथन प्रायः व्याख्यानों में किया जाता है। मन चाहे मनुष्य को बन्धन - दुख सागर में गिरा सकता है और चाहे मोक्ष - आनन्द में डुबकी लगवा सकता है। मन दोनों कार्यों (बन्धन व मोक्ष) को कुशलता पूर्वक सम्पन्न कराने में सक्षम है। परन्तु जीवात्मा पर निर्भर करता है कि वह बन्धन की ओर मन को प्रवृत्त करे या मोक्ष की ओर प्रवृत्त करे । कोई कहे आत्मा भला क्यों मन को प्रवृत्त करेगा ? मन ही स्वयं प्रवृत्त होता है, मन ही स्वयं जिसमें लगना चाहता है, तो लग जाता है। आत्मा नहीं लगवाता है । कहा भी जाता है कि मन नहीं मानता, मन स्वयं जाता-आता है । मैं (आत्मा) स्वयं चाहता हूँ कि मन मेरे अनुसार चले, पर वह तो अपनी इच्छा से जहाँ लगना हो वहाँ लग जाता है, मेरी बात नहीं मानता आदि-आदि। यहाँ पर यह बात अवश्य जाननी चाहिए कि संसार में दो ही प्रकार के पदार्थ हैं । एक प्रकार के पदार्थ स्वयं प्रवृत्त होते हैं, जिन्हें अन्य पदार्थों की प्रेरणा या सहयोग की अपेक्षा नहीं होती है । दूसरे प्रकार के पदार्थ वे होते हैं, जो स्वयं प्रवृत्त नहीं होते हैं और नहीं हो सकते हैं, जिनके प्रवृत्त होने में अन्यों की प्रेरणा या सहयोग की अपेक्षा अवश्यं भावी है। वे दो प्रकार के पदार्थ हैं – पहला चेतन तथा दूसरा अचेतन-जड़। चेतन स्वयं भी प्रवृत्त होता है और अन्य चेतनों से प्रेरित हो कर भी प्रवृत्त होता है । परन्तु जड़ स्वयं प्रवृत्त न हो कर चेतनों से प्रेरणा या सहयोग पा कर ही प्रवृत्त होता है। जड़ व चेतन में यह एक विशेष भेद हैं।

यहाँ पर यह विचार कर देखा जाये कि क्या मन चेतन है ? यदि चेतन होता होगा तो स्वयं प्रवृत्त होगा और यदि अचेतन-जड़ होगा तो चेतन की प्रेरणा से प्रवृत्त होगा, यह सिद्धान्त स्थापित होगा । दूसरा यह भी सिद्धान्त है कि जगत् के मूल कारण सत्व, रज, तम हैं और ये मूल कारण कार्यजगत् के मूल कारण सत्व, रज, तम हैं और ये मूल कारण कार्यजगत् में मूल कारण के रूप में प्रवृत्त नहीं होते हैं । व्यवहार के रूप में जो भी जड़ पदार्थ प्रवृत्त होते हैं, वे कार्य पदार्थ ही होते हैं । मन को कार्य पदार्थ के रूप में स्वीकार किया जाता है । इस सिद्धान्त से यह बात स्पष्ट होती हैं कि मन कार्य पदार्थ है और कार्य पदार्थ स्वयं प्रवृत्त हुआ लोक में कहीं पर भी दिखाई नहीं देता है । जितने भी कार्य पदार्थ (जिन्हें मनुष्यों ने बनाया) लोक में प्रवृत्त होते हुए दिखाई देते हैं, उन सबको प्रेरित करने वाले चेतन ही हैं। जिन कार्य पदार्थों को ईश्वर (सृष्टि कर्त्ता) ने बनाया, उन्हें ईश्वर भी प्रवृत्त करता है और कुछ (महतत्व, अहंकार, मन इन्द्रियों आदि को) को मनुष्य भी प्रवृत्त करता है। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि कोई भी कार्य पदार्थ स्वयं प्रवृत्त नहीं होता है। सभी ऋषियों ने मन को कार्य पदार्थ माना है, इसलिए वह मन भी स्वयं प्रवृत्त नहीं होता है ।

प्रत्येक पदार्थ का अपना एक विशेष स्वभाव रहता है, जो अन्य पदार्थों से उसे अलग करता है और उसके स्वभाव से उसका पहचान बन जाता है । मन के विषय में भी ऐसा ही समझना चाहिए कि मन की अपनी एक विशेष पहचान है। लोक में चंचलता के रूप में मन की पहचान है। जिस किसी से भी पूछा जाये कि मन का स्वभाव क्या है? उत्तर यही मिलता है कि मन का स्वभाव चंचल है। चाहे पठित-वर्ग हो, चाहे अपिठत-वर्ग हो सबका एक जैसा ही उत्तर आता है । यदि तात्विक रूप से विचार किया जाये तो पता चलता है कि मन का स्वभाव चंचल नहीं होना चाहिए । क्योंकि कोई भी पदार्थ बनता है या बनाया जाता है, तो पदार्थ के बनने की प्रक्रिया दो प्रकार की होती है । एक प्रक्रिया में मूल कारणों को सम (समान मात्रा) मात्रा में ले कर बनाया जाता है । जैसे त्रिकटु (सोंठ, पिप्पली, कालीमिर्च) दूसरी प्रक्रिया में विषम् (असामान मात्रा) मात्रा में ले कर बनाया जाता है । जैसे उत्तर भारत में खीर बनाते हैं, तो दूध की मात्रा सर्वाधिक होती है और चावल, चीनी की मात्रा अत्यल्प होती है ।

मन के सन्दर्भ में भी ऐसा ही समझना चाहिए कि मन को परमेश्वर ने बनाया है, तो क्या मूल कारणों को सम मात्रा में ले कर बनाया या विषय मात्रा में ले कर बनाया ? यदि सम मात्रा में ले कर बनाया गया है, तो जितने मूल कारण होंगे उतने स्वभाव कार्य में समान रूप से होंगे। यदि विषम मात्रा में मूल कारणों को लेकर बनाया गया है, तो जिस की मात्रा सर्वाधिक होगी, उसी का स्वभाव कार्य पदार्थ में अधिक रहेगा । मन के मूल कारण सत्व, रज, तम हैं । यदि इन तीनों कारणों को सम मात्रा में मिला कर बनाया गया हो, तो तीनों का स्वभाव समान मात्रा में रहेंगे । यदि तीनों कारणों को विषम मात्रा में मिलाकर बनाया गया हो, तो जिस कारण की अधिकता होगी, उसी का स्वभाव अधिक होगा अन्यों का गौण रूप में रहेगा ।

लोक में मन के स्वभाव को चंचल कहा जाता है। यहाँ पर यह विचार करना चाहिए कि यह चंचलता किस तत्त्व में है। रज नामक तत्व में चंचलता है, ऐसा सभी स्वीकार करते हैं। अब यह विचार करना है कि क्या मन के निर्माण में रज तत्त्व की अधिक मात्रा है ? क्योंकि जिस तत्त्व की अधिक मात्रा हो, उसी का स्वभाव कार्य पदार्थ में आता है। यदि मन चंचल है तो मन में सर्वाधिक मात्रा रज तत्त्व की होनी चाहिए। परन्तु महर्षि वेदव्यास ऐसा नहीं मानते हैं। क्योंकि महर्षि वेदव्यास मन की निर्माण प्रक्रिया में लिखते हैं कि **'चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्'** (योगदर्शन १.२. व्यासभाष्य) अर्थात् चित्त-मन प्रख्या-सत्त्व, प्रवृत्ति-रज, स्थिति-तम नामक तीनों पदार्थों से बनने के कारण त्रिगुणम्-तीनों तत्त्वों वाला है । महर्षि यह मानते हैं कि यद्यपि मन सत्व, रज, तम नामक तीनों मूल कारणों से बना हुआ है परन्तु **'प्रख्यारूपं हि चित्तसत्तवम्'** (योग. १.२. व्यासभाष्य) मन सत्व गुण प्रधान है अर्थात् मन में सत्व की मात्रा सर्वाधिक है। तभी मन को प्रख्यारूप-सत्वप्रधान कहा है।

क्रमशः

प्रेषक - श्री हरिदेव रामधनी, आर्य रत्न, मन्त्री आर्य सभा मॉरीशस

MESSAGE FROM DAKSH BHARADWAJ

Shri Daksh Bharadwaj, grandson of Dr Chiranjiva Bharadwaj had intimated his consent to be present at the International Conference of the Arya Samaj held from 05 to 08 December 2013 at Trois Boutiques, Union Vale.

Unfortunately he apologised for not being able to due to urgent family matters and other commitments. We give below the message he sent to Arya Sabha Mauritius.

Respected

Ladies and Gentleman

I am required to speak on the subject of what great personalities who came to Mauritius giving up their Lucrative businesses and professional practices with a zeal to uplift the moral, cultural and financial status of Indians who has migrated to Mauritius years ago and who were living in inhuman, pitiable conditions. My Grandfather Dr. Chiranjiva Bharadwaj was one of these personalities who came to Mauritius in 1911.

Before I talk about him and his zeal and love for Mauritius. I may be permitted to say a few words.

Two years ago I was honored to being invited to Mauratius _for the Centenary Celebration of My Grandfather reaching this beautiful island., after 100 years. The amount of respect, love, and admiration which was bestowed on him by the citizens of Mauritius including the President and the Prime Minister chocked me with emotion and brought tears to my eyes. When in today's materialistic world, when children hardly care for their own parents, here Mauritius was honoring him even after 100 years. It should be seen that not only he would have contributed to the uplift of the Indian Community in all aspects, but also proved that the love of Mauritians and that they were people of character, gratitude and sincerity which Alas is very difficult to find in the world of today.

I will now say a few words about My Grandfather. He was born in a family who were well educated. His father was a Principal of an educational institution in Punjab in India.on 6.6.1872.

After finishing his schooling he went to Lahore (now in Pakistan) for higher studies and came into contact with the Brilliant genius Pandit Gurudatt. Who was an atheist at but after several meetings with Swami Dayanand Ji and specially seeing the way he left his body got totally committed to principals of Arya Samaj. My Grandfather was fortunate to interact with him in his formative years.

My Grandfather was a person of principles and believed that the worst sin is untruthfulness. As was the customs on those days his was also a child marriage. When he reached the age of 25 he decided to wed again in the proper Arya Samaj System which was as per the scriptures and married the same girl again.

After his graduation as a Doctor in India he went to Edinburgh and qualified with distinction as an FRCS, MRCP AND DPH. Normally even today there are very few who are MRCP and FRCS. He started his practice but the love and affection of his people and country brought him back. While in Edinburgh he translated the Magnum Opus of Swami Dayanand namely Stayarth Parkash in English "LIGHT OF TRUTH" in 1904 which I believe even today is respected as one of the best English translations.

Being a staunch Nationalist and believing in Swaraj, although he was offered several prestigious positions,because of his qualifications and brilliant record, by the British Government but he refused to accept any of them. He was then offered various positions by the then Rulers of Kasmir etc. He did not accept the same because one of the conditions was that he was required to bow to the statues of their Gods. He stated he only bowed to God and elders and no one else and being an Aryasamajist did not believe in Idol worship.

Finally he started his own Medical Practice in Lahore and soon had a very flourishing Practice. Patients flocked to him because of his medical acumen and high moral character.

Subsequently he was approached by certain very important persons who informed him of the state of Indians residing in Burma specially Rangoon. They were not treated well and were disunited and required major reforms and Unification and a proper direction. They requested him to come to Burma and take up this major programme. He left his flourishing Practice and went to Rangoon with his family. On reaching Rangoon on November 1910 he in a very short time carried out social reform programmes set up an Aryasamaj and travelled spreading the Indian Ethos and managed to unite the Indian community. He had also set up his Practice which got established in a very short time. From his earnings he donated a lot to the Aryasamaj.

He had hardly been there for a year or so when Barrister Manilal met him and seeing the wonderful work he had done in less than a year requested him to come to Mauritius where the migrated population from India were living in poor conditions with no status and were downtrodden.

Though he had a very prosperous and lucrative practice but the zeal of an Aryasamajist and the challenge of taking up a fight for the downtrodden fellow Indians got the better of him and he left Burma in November 1911 and reached reached Mauritius on December 1911. The rest is history and all of you are aware of it better than me. Briefly I may mention he Established the Principles of Aryasamaj, Aryabhavans were made all over Mauratius. He instilled the character pride of Indians as they were ARYANS Progressive beings. His aim was to lift the morale of Indians irrespective of Religon cast and Creed. He fought against the Establishment and Cremation grounds were built for Hindus as earlier they were forced to bury their dead.

He had established his practice in Mauritius but spent from his earnings on Projects for betterment and uplift of the public. He toured small towns in Mauritius with his wife spreading the doctrine of the Aryasamaj including Education and moral fiber of the youth.

After spending about years and establishing a very vibrant ,proud and respected Indian society full of Zeal and vision he left Mauritius leaving the work he had done in the safe hands of a very learned person namely Swami Swatantranand ji.

Before leaving Mauritius he donated all he had earned for the Aryasamaj of Mauritius. He carried with him in his heart a feeling of achievement , fond memories and the respect and love which the people of Mauritius had bestowed upon him.

I must add a few more words as to what happened when he reached India, Soon after reaching Lahore he took up reigns of the Aryasamaj and also established his Practice. But fate had a twist. While serving a patient,who no other Doctor was ready to treat because of the fear of catching an infection, he died on 8/5 /1915 but the patient was cured .It was later learnt that he was killed by the local doctors because of professional jealousy. He was only 43 years.old. He left behind four children incuding my Father Dr. Sk Bharadwaj who were all very very young. They had left everything in Mauratius and were almost penniless, But they had inherited the the genes of a fighter and as they say WHEN THE GONG GETS TOUGH THE TOUGH GET GOING. They went through the hardships but my Father became a Doctor and then specialized as ant ENT surgeon form Vienna probably the first ENT specialist from Vienna in 1934.

I must inform you that while he was a medical Doctor, His hobby was Nuclear Physics, and new more than dozen languages including French, Latin, German etc. He inherited his fathers intellectual streak of research and put in about 60 years of research on Vedas. His finding was that the Sanskrit of today is a Deravative of the Vedic Sanskrit language which was vast and Fathomless and not bound by normal grammar and translations done by normal Sanskrit of today the Vedic meanings at times looked illogical and unscientific. He also found that Vedas were full of Science. Amongst other articles of his two books namely "VEDAS A NEW PRECPITION" were published which was based on his research of sixty years. These are now being republished in a digital format by me with the help of my cousin Dr. Krishan Bharadwaj in U.S.A.

My father died peacefully after completing his 100 years.

So friends the light that my late illustrious Grandfather Dr. Chiranjiva Bharadwaj lit still continues even after a hundred years. I look forward more of you joining in this mammoth project of research once of you have read these books which will shortly be available and we would be very happy to receive your comments and interact with you.

Contributions of several such personalities who dedicated their years after giving up their lucrative business and practices to Mauritius shows that there was something very charismatic about the people of Mauritius which pulled them from thousands of miles to this beautiful island.

Thanking you

Wisdom & Wit

S. Bissessur, B.A, Hons

"Absolute trust in someone is the very essence of education."

Blunders, mistakes and errors are quite painful and hurtful when they do happen and occur.

But some couples of years later,
A huge collection of mistakes eventually called,
Layers of Experience – Lead us to complete and resounding success.
Life provides and gives answers in ways ….. it, also says yes and gives you what, you virtually, want it.
But, when says no – and always gives you something!
Better, it always says – Wait,
And give you the best for life's rest and test!
Everything everyone will, and can never get.

This is the very RULE OF LIFE AND LIFE'S STRIFE.

Never try to get – what is not yours.
But, don't dare to lose what is yours!

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

Circular to all the Secretaries of Arya Samajs & Arya Mahila Samajs

ANNUAL RETURNS & COMPILATION OF REGISTER OF REPRESENTATIVE MEMBERS : YEAR 2014-2015

In view of the forthcoming Annual General Meeting of Arya Sabha Mauritius (the Sabha) scheduled to be held before end of March 2014, the Secretaries of the branches of the Sabha (Arya Samajs & Arya Mahila Samajs) are hereby requested to attend to the following :

1.0 The Annual General Meeting of the Samaj should imperatively be held by 31 January 2014 and the agenda to include:

1.1 The approval of the minutes of proceedings of the last Annual General Meeting of the Samaj;

1.2 The Annual Reports of the President and/or Secretary on the activities of the Samaj;

1.3 The Treasurer's Report, i.e. Statements of (a) Income and Expenditure, (b) Assets and Liabilities, and (c) Inventory Form;

1.4 The Programme of Works of the year 2014;

1.5 The Estimate Budget for the year 2014; and

1.6 The Election of Office Bearers, the appointment of auditors and Representative Members (as applicable.)

2.0 The annual returns as per forms [DC13/01 to 05] sent through the respective pundits of the district along with a copy of the bank statements for the period ending 31.12.2013 should reach the Office of the Sabha by Saturday 8 February 2014, the latest.

3.0 Notes:

3.1 *The Annual General Meeting of the Samaj is to be held under the supervision of the Purohit / Purohita designated to coordinate the activities of the Samaj.*

3.2 *The Purohit / Purohita should be notified at least 10 days prior to the meeting.*

3.3 *The minutes of proceedings of the meeting and the annual returns should be countersigned by the said Purohit / Purohita.*

3.4 *Only compliant members, i.e. those who are not in arrears with the subscriptions as at 31.12.2013, would be allowed to participate at the said meeting.*

3.5 *The Samaj should ensure payment of the chatoorthanse (annual subscription) directly to the Sabha, such amount is calculated on the number of members inscribed on the annual returns. As per the revised rules and regulations of the Arya Sabha 'every Samaj shall annually pay one tenth of the subscription fee collected from the total number of its members'.*

3.6 *The updated lists and returns would serve for the purpose of compiling the list of Representative Members who would be allowed to participate at the forthcoming Annual General Meeting of the Sabha.*

3.7 *Any Samaj who fails to submit the said returns [DC13/01 to 05] in the appropriate format and forms by the 08.02.2014 and/or is in arrears with the payment of its annual subscription to the Sabha would be considered as non-compliant.*

3.8 *It would be highly appreciated if a key office bearer (President or Secretary or Treasurer) could call at the Sabha for the purpose of filing the annual returns, which would be verified at that instant, thus ensuing compliance to the above.*

We trust that the office bearers of the Samaj would duly take cognisance of the above and act accordingly.

H. Ramdhony
Secretary